शेरशाह की स्थापत्य कला एवं न्याय प्रबन्ध

स्थापत्य कला →

शेरशाह कुशल भवन निर्माता भी था। उसने झेलम के तट पर रोहतासगढ़ नामक नगर बसाया तथा दिल्ली का पुराना किला बनवाया। फरग्युसन के अनुसार यह पुराना किला शेरशाह द्वारा बनवायी गयी इमारतों में सबसे अच्छा और पूर्ण है। शेरशाह द्वारा निर्मित सबसे विख्यात भवन सहसराम में उसका मकबरा है, जिसे पंजाबी शिल्पकार अलीवाल खाँ ने बनवाया था। यह मकबरा हिन्दू-मुस्लिम कला का सुन्दर सम्मिश्रण है।" पर्सी ब्राउन के अनुसार, " शेरशाह का मकबरा भारतीय स्मारकों में सबसे प्रसिद्ध है।" हैवेल तथा कनिंघम ने भी इसकी बहुत प्रशंसा की है। डॉ० कानूनगो के अनुसार " इस भवन का बाहरी खुरदरापन शेरशाह के चरित्र की बाहरी कठोरता के अनुरूप है, जबकि उसका भीतरी सुन्दर भाग उसके दयालु हृदय का परिचायक है।"

न्याय प्रबन्ध →

शेरशाह न्यायप्रिय सम्राट था। वह कहता था " धार्मिक कृत्यों में न्याय सर्वश्रेष्ठ है। उसकी धारणा थी कि बिना दंड के न्याय नहीं रह सकता।" उसने निष्पक्ष न्याय की व्यवस्था की। डॉ० एस० आर० शर्मा के शब्दों में, " उसने अत्याचारी का पक्ष कभी -

P. T. O

Scanned with CamScanner

नहीं लिया, चाहे वे रिश्तेदार हों, प्रिय पुत्र हो या उसके प्रसिद्ध सरदार हो या उसकी जाति के लोग हो।" उसने स्नान करती हुई स्त्री पर पान का बीड़ा चूंकने वाले अपने भतीजे आदिल खां को भी दण्ड दिया था। वह किसानों पर अत्याचार करनेवाले को कठोर दंड देता था।

शेरशाह राज्य का सर्वोच्च न्यायधीश था। वह प्रत्येक बुद्धवार को मुकदमे सुनता था। उसके बाद काजी होता था, जो अपील संबंधी मुकदमें सुनता था। मुख्य सिकदार फौजदारी मुकदमें तथा मुंसिफ दीवानी मुकदमें सुनता था। शेरशाह का न्याय प्रबंध बड़ा उत्तम था। निजामुद्दीन के अनुसार," शेरशाह का भय और उसकी न्यायप्रियता इतनी अधिक थी कि उसके शासनकाल में डाकू तथा चोर व्यापारियों की वस्तुओं पर निगरानी रखते थे।"